Sri Siva Vishnu Temple
6905 Cipriano Road, Lanham MD 20706
Tel: (301) 552-3335 Fax: (301) 552-1204
E-Mail: ssvt@ssvt.org Web Site: http://www.ssvt.org

Hanuman Puja & Koti Hanuman Chalisa Parayanam by Devotees

बुद्धिर्बलं यशोधैर्यं निर्भयत्व–मरोगता ।
अजाड्यं वाक्पटुत्वं च हनुमत्–स्मरणाद्–भवेत् ॥

Prayer Book

Sanskrit

Contents

|| śrī nāma rāmāyaṇam || 3

|| śrī hanumān cālīsā || 9

|| Sri Anjaneya Stotram || 13

|| śrī āñjaneyāṣṭottara śatanāmāvaḻiḥ || 15

|| śrīrāmamaṅgalaśāsanam || 19

Acknowledgement

This document has been prepared using sources from the following websites:
www.prapatti.com
https://sanskritdocuments.org

॥ श्री नाम रामायणम् ॥

॥ बालकाण्डः ॥

शुद्धब्रह्मपरात्पर राम् ॥1॥
कालात्मकपरमेश्वर राम् ॥2॥
शेषतल्पसुखनिद्रित राम् ॥3॥
ब्रह्माद्यामरप्रार्थित राम् ॥4॥
चण्डकिरणकुलमण्डन राम् ॥5॥
श्रीमद्दशरथनन्दन राम् ॥6॥
कौसल्यासुखवर्धन राम् ॥7॥
विश्वामित्रप्रियधन राम् ॥8॥
घोरताटकाघातक राम् ॥9॥
मारीचादिनिपातक राम् ॥10॥
कौशिकमखसंरक्षक राम् ॥11॥
श्रीमदहल्योद्धारक राम् ॥12॥
गौतममुनिसम्पूजित राम् ॥13॥
सुरमुनिवरगणसंस्तुत राम् ॥14॥
नाविकधावितमृदुपद राम् ॥15॥
मिथिलापुरजनमोहक राम् ॥16॥
विदेहमानसरञ्जक राम् ॥17॥
त्र्यम्बककार्मुकभञ्जक राम् ॥18॥
सीतार्पितवरमालिक राम् ॥19॥
कृतवैवाहिककौतुक राम् ॥20॥
भार्गवदर्पविनाशक राम् ॥21॥
श्रीमदयोध्यापालक राम् ॥22॥
राम् राम् जय राजा राम् ।
राम् राम् जय सीता राम् ॥

॥ अयोध्याकाण्डः ॥

अगणितगुणगणभूषित राम् ॥23॥
अवनीतनयाकामित राम् ॥24॥
राकाचन्द्रसमानन राम् ॥25॥
पितृवाक्याश्रितकानन राम् ॥26॥
प्रियगुहविनिवेदितपद राम् ॥27॥
तत्क्षालितनिजमृदुपद राम् ॥28॥
भरद्वाजमुखानन्दक राम् ॥29॥
चित्रकूटाद्रिनिकेतन राम् ॥30॥
दशरथसन्ततचिन्तित राम् ॥31॥
कैकेयीतनयार्थित राम् ॥32॥
विरचितनिजपितृकर्मक राम् ॥33॥
भरतार्पितनिजपादुक राम् ॥34॥
राम् राम् जय राजा राम् ।
राम् राम् जय सीता राम् ॥

॥ अरण्यकाण्डः ॥

दण्डकवनजनपावन राम् ॥35॥
दुष्टविराधविनाशन राम् ॥36॥
शरभङ्गसुतीक्ष्णार्चित राम् ॥37॥
अगस्त्यानुग्रहवर्धित राम् ॥38॥
गृध्राधिपसंसेवित राम् ॥39॥
पञ्चवटीतटसुस्थित राम् ॥40॥
शूर्पणखार्तिविधायक राम् ॥41॥
खरदूषणमुखसूदक राम् ॥42॥
सीताप्रियहरिणानुग राम् ॥43॥

मारीचार्तिकृदाशुग राम् ॥44॥
विनष्टसीतान्वेषक राम् ॥45॥
गृध्राधिपगतिदायक राम् ॥46॥
शबरीदत्तफलाशन राम् ॥47॥
कबन्धबाहुच्छेदक राम् ॥48॥
राम् राम् जय राजा राम् ।
राम् राम् जय सीता राम् ॥

॥ किष्किन्धाकाण्डः ॥

हनुमत्सेवितनिजपद राम् ॥49॥
नतसुग्रीवाभीष्टद राम् ॥50॥
गर्वितवालिसंहारक राम् ॥51॥
वानरदूतप्रेषक राम् ॥52॥
हितकरलक्ष्मणसंयुत राम् ॥53॥
राम् राम् जय राजा राम् ।
राम् राम् जय सीता राम् ॥

॥ सुन्दरकाण्डः ॥

कपिवरसन्ततसंस्मृत राम् ॥54॥
तद्गतिविघ्नध्वंसक राम् ॥55॥
सीताप्राणाधारक राम् ॥56॥
दुष्टदशाननदूषित राम् ॥57॥
शिष्टहनूमद्भूषित राम् ॥58॥
सीतावेदितकाकावन राम् ॥59॥
कृतचूडामणिदर्शन राम् ॥60॥
कपिवरवचनाश्वासित राम् ॥61॥
राम् राम् जय राजा राम् ।
राम् राम् जय सीता राम् ॥

॥ युद्धकाण्डः ॥

रावणनिधनप्रस्थित राम् ॥62॥
वानरसैन्यसमावृत राम् ॥63॥
शोषितसरिदीशार्थित राम् ॥64॥
विभीषणाभयदायक राम् ॥65॥
पर्वतसेतुनिबन्धक राम् ॥66॥
कुम्भकर्णशिरच्छेदक राम् ॥67॥
राक्षससङ्घविमर्दक राम् ॥68॥
अहिमहिरावणचारण राम् ॥69॥
संहृतदशमुखरावण राम् ॥70॥
विधिभवमुखसुरसंस्तुत राम् ॥71॥
खस्थितदशरथवीक्षित राम् ॥72॥
सीतादर्शनमोदित राम् ॥73॥
अभिषिक्तविभीषणनत राम् ॥74॥
पुष्पकयानारोहण राम् ॥75॥
भरद्वाजादिनिषेवण राम् ॥76॥
भरतप्राणप्रियकर राम् ॥77॥
साकेतपुरीभूषण राम् ॥78॥
सकलस्वीयसमानत राम् ॥79॥
रत्नलसत्पीठास्थित राम् ॥80॥
पट्टाभिषेकालङ्कृत राम् ॥81॥
पार्थिवकुलसम्मानित राम् ॥82॥
विभीषणार्पितरङ्गक राम् ॥83॥
कीशकुलानुग्रहकर राम् ॥84॥
सकलजीवसंरक्षक राम् ॥85॥
समस्तलोकाधारक राम् ॥86॥
राम् राम् जय राजा राम् ।
राम् राम् जय सीता राम् ॥

॥ उत्तरकाण्डः ॥

आगतमुनिगणसंस्तुत राम् ॥87॥
विश्रुतदशकण्ठोद्भव राम् ॥88॥
सीतालिङ्गननिर्वृत राम् ॥89॥
नीतिसुरक्षितजनपद राम् ॥90॥
विपिनत्याजितजनकज राम् ॥91॥
कारितलवणासुरवध राम् ॥92॥
स्वर्गतशम्बुकसंस्तुत राम् ॥93॥
स्वतनयकुशलवनन्दित राम् ॥94॥
अश्वमेधक्रतुदीक्षित राम् ॥95॥
कालावेदितसुरपद राम् ॥96॥
आयोध्यकजनमुक्तिद राम् ॥97॥
विधिमुखविबुधानन्दक राम् ॥98॥
तेजोमयनिजरूपक राम् ॥99॥
संसृतिबन्धविमोचक राम् ॥100॥
धर्मस्थापनतत्पर राम् ॥101॥
भक्तिपरायणमुक्तिद राम् ॥102॥
सर्वचराचरपालक राम् ॥103॥
सर्वभवामयवारक राम् ॥104॥
वैकुण्ठालयसंस्थित राम् ॥105॥
नित्यानन्दपदस्थित राम् ॥106॥
राम् राम् जय राजा राम् ॥107॥
राम् राम् जय सीता राम् ॥108॥
राम् राम् जय राजा राम् ।
राम् राम् जय सीता राम् ॥

॥ इति नामरामायणम् सम्पूर्णम् ॥

श्री राम

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनौ रघुवर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौ पवनकुमार।
बल बुधि विधा देहु मोहि हरहु कलेस विकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥ 1 ॥

राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा॥ 2 ॥

महावीर विक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥ 3 ॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा॥ 4 ॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ 5 ॥

शंकर सुवन केसरी नंदन।
तेज प्रताप महा जग बंदन॥ 6 ॥

विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥ 7 ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥ 8 ॥

सूक्ष्म रूप धरी सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा॥ 9 ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे॥ 10 ॥

लाय सँजीवनि लखन जियाए।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाए॥ 11 ॥

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥ 12 ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥ 13 ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा॥ 14 ॥

जम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते।
कबी कोबिद कहि सकैं कहाँ ते॥ 15 ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राजपद दीन्हा॥ 16 ॥

तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना॥ 17 ॥

जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ 18 ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥ 19 ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ 20 ॥

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥ 21 ॥

सब सुख लहै तुम्हारी शरना।
तुम रक्षक काहू को डरना॥ 22 ॥

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनौं लोक हाँक ते काँपे॥ 23 ॥

भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै॥ 24 ॥

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥ 25 ॥

संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥ 26 ॥

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा॥ 27 ॥

और मनोरथ जो कोई लावै।
सोहि अमित जीवन फल पावै॥ 28 ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥ 29 ॥

साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे॥ 30 ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन्ह जानकी माता॥ 31 ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥ 32 ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै॥ 33 ॥

अंत काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई॥ 34 ॥

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई॥ 35 ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥ 36 ॥

जय जय जय हनुमान गुसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥ 37 ॥

जो शत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई॥ 38 ॥

जो यह पढे हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा॥ 39 ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥ 40 ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप॥

श्री आञ्जनेय स्तोत्रम्

गोष्पदी–कृत–वारीशं मशकी–कृत–राक्षसम् ।
रामायण–महामाला–रत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥ 1॥

अञ्जना–नन्दनं–वीरं जानकी–शोक–नाशनम् ।
कपीशमक्ष–हन्तारं वन्दे लङ्का–भयङ्करम् ॥ 2॥

महा–व्याकरणाम्भोधि–मन्थ–मानस–मन्दरम् ।
कवयन्तं राम–कीर्त्या हनुमन्तमुपास्महे ॥ 3॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं
यः शोक–वह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ 4॥

मनोजवं मारुत–तुल्य–वेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानर–यूथ–मुख्यं
श्रीराम–दूतं शिरसा नमामि ॥ 5॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं
काञ्चनाद्रि–कमनीय–विग्रहम् ।
पारिजात–तरु–मूल–वासिनं
भावयामि पवमान–नन्दनम् ॥ 6॥

यत्र यत्र रघुनाथ–कीर्तनं
तत्र तत्र कृत–मस्तकाञ्जलिम् ।
बाष्प–वारि–परिपूर्ण–लोचनं
मारुतिर्नमत राक्षसान्तकम् ॥ 7॥

बुद्दिर्बलं यशोधैर्यं निर्भ्यत्व मरोगता
अजाठ्यम् वाक्पटुत्वं – च हनूमत् स्मरणाद् भवेत् ॥8॥

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्री आञ्जनेयाष्टोत्तरशतनामावळिः ॥

1	ओं आञ्जनेयाय नमः	2	ओं महावीराय नमः
3	ओं हनूमते नमः	4	ओं मारुतात्मजाय नमः
5	ओं तत्वज्ञानप्रदाय नमः	6	ओं सीतादेवीमुद्रप्रदायकाय नमः
7	ओं अशोकवनिकच्छेत्रे नमः	8	ओं सर्वमायाविभञ्जनाय नमः
9	ओं सर्वबन्धविमोक्त्रे नमः	10	ओं रक्षोविध्वंसकारकाय नमः
11	ओं परविद्यापरीहाराय नमः	12	ओं परशौर्यविनाशनाय नमः
13	ओं परमन्त्रनिराकर्त्रे नमः	14	ओं परयन्त्रप्रभेदकाय नमः
15	ओं सर्वग्रहविनाशिने नमः	16	ओं भीमसेनसहायक्यते नमः
17	ओं सर्वदुःखहराय नमः	18	ओं सर्वलोकचारिणे नमः
19	ओं मनोजवाय नमः	20	ओं पारिजातद्रुममूलस्थाय नमः
21	ओं सर्वमन्त्रस्वरूपवते नमः	22	ओं सर्वतन्त्रस्वरूपिणे नमः
23	ओं सर्वयन्त्रात्मकाय नमः	24	ओं कपीश्वराय नमः
25	ओं महाकायाय नमः	26	ओं सर्वरोगहराय नमः
27	ओं प्रभवे नमः	28	ओं बलसिद्धिकराय नमः
29	ओं सर्वविद्यासंपत्प्रदायकाय नमः	30	ओं कपिसेनानायकाय नमः
31	ओं भविष्यच्चतुराननाय नमः	32	ओं कुमारब्रह्मचारिणे नमः

33	ओं रत्नकुण्डलदीप्तिमते नमः	34	ओं चञ्चलद्बालसन्नद्ध लंबमान शिखोज्वलाय नमः
35	ओं गन्धर्वविद्यातत्वज्ञाय नमः	36	ओं महाबलपराक्रमाय नमः
37	ओं कारागृहविमोक्त्रे नमः	38	ओं शृङ्खलाबन्धमोचकाय नमः
39	ओं सागरोत्तारकाय नमः	40	ओं प्राज्ञाय नमः
41	ओं रामदूताय नमः	42	ओं प्रतापवते नमः
43	ओं वानराय नमः	44	ओं केसरीसुताय नमः
45	ओं सीताशोकनिवारणाय नमः	46	ओं अञ्जनागर्भसंभूताय नमः
47	ओं बालार्कसदृशाननाय नमः	48	ओं विभीषणप्रियकराय नमः
49	ओं दशग्रीवकुलान्तकाय नमः	50	ओं लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः
51	ओं वज्रकायाय नमः	52	ओं महाद्युतये नमः
53	ओं चिरञ्जीविने नमः	54	ओं रामभक्ताय नमः
55	ओं दैत्यकार्यविघातकाय नमः	56	ओं अक्षहन्त्रे नमः
57	ओं कालनाभाय नमः	58	ओं पञ्चवक्त्राय नमः
59	ओं महातपसे नमः	60	ओं लङ्किणीनिभञ्जनाय नमः
61	ओं श्रीमते नमः	62	ओं सिंहिकाप्राणभञ्जनाय नमः
63	ओं गन्धमादनशैलस्थाय नमः	64	ओं लङ्कापुरविदाहकाय नमः
65	ओं सुग्रीवसचिवाय नमः	66	ओं धीराय नमः
67	ओं शूराय नमः	68	ओं दैत्यकुलान्तकाय नमः
69	ओं सुरार्चिताय नमः	70	ओं महातेजसे नमः

71	ओं रामचूडामणिप्रदाय नमः	72	ओं कामरूपिणे नमः
73	ओं पिङ्गळाक्षाय नमः	74	ओं वार्धिमैनाकपूजिताय नमः
75	ओं कबळीकृत मार्ताण्ड-मण्डलाय नमः	76	ओं विजितेन्द्रियाय नमः
77	ओं रामसुग्रीवसन्धात्रे नमः	78	ओं महारावणमर्दनाय नमः
79	ओं स्फटिकाभाय नमः	80	ओं वागधीशाय नमः
81	ओं नवव्याकृतिपण्डिताय नमः	82	ओं चतुर्बाहवे नमः
83	ओं दीनबन्धवे नमः	84	ओं महात्मने नमः
85	ओं भक्तवत्सलाय नमः	86	ओं सञ्जीवननगाहर्त्रे नमः
87	ओं शुचये नमः	88	ओं वाग्मिने नमः
89	ओं दृढव्रताय नमः	90	ओं कालनेमिप्रमथनाय नमः
91	ओं हरिमर्कटमर्कटाय नमः	92	ओं दान्ताय नमः
93	ओं शान्ताय नमः	94	ओं प्रसन्नात्मने नमः
95	ओं शतकण्ठमदापहृते नमः	96	ओं योगिने नमः
97	ओं रामकथालोलाय नमः	98	ओं सीतान्वेषणपण्डिताय नमः
99	ओं वज्रदंष्ट्राय नमः	100	ओं वज्रनखाय नमः
101	ओं रुद्रवीर्यसमुद्भवाय नमः	102	ओं इन्द्रजित्प्रहित अमोघब्रह्मा मानदायकाय नमः
103	ओं पार्थध्वजाग्रसंवासिने नमः	104	ओं शरपञ्जरभेदकाय नमः
105	ओं दशबाहवे नमः	106	ओं लोकपूज्याय नमः

107	ओं जाम्बवप्रीतिवर्धनाय नमः	108	ओं सीतासमेत श्रीरामपादसेवा धुरन्धराय नमः

॥ इति श्री आञ्जनेयाष्टोत्तरशतनामावळिः सम्पूर्णा ॥

॥ श्रीराममङ्गलशासनम् ॥

मङ्गलं कौशलेन्द्राय महनीयगुणाब्धये ।
चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥ 1॥

वेदवेदान्तवेद्याय मेघश्यामलमूर्तये ।
पुंसां मोहनरूपाय पुण्यश्लोकाय मङ्गलम् ॥ 2॥

विश्वामित्रान्तरङ्गाय मिथिलानगरीपतेः ।
भाग्यानां परिपाकाय भव्यरूपाय मङ्गलम् ॥ 3॥

पितृभक्ताय सततं भ्रातृभिः सह सीतया ।
नन्दिताखिललोकाय रामभद्राय मङ्गलम् ॥ 4॥

त्यक्तसाकेतवासाय चित्रकूटविहारिणे ।
सेव्याय सर्वयमिनां धीरोदयाय मङ्गलम् ॥ 5॥

सौमित्रिणा च जानक्या चापबाणसिधारिणे ।
संसेव्याय सदा भक्त्या स्वामिने मम मङ्गलम् ॥ 6॥

दण्डकारायवासाय खरदूषणशत्रवे ।
गृध्रराजाय भक्ताय मुक्तिदायास्तु मङ्गलम् ॥ 7॥

सादरं शबरीदत्तफलमूलाभिलाषिणे ।
सौलभ्यपरिपूर्णाय सत्त्वोद्रिक्ताय मङ्गलम् ॥ 8॥

हनुमत्समवेताय हरीशाभीष्टदायिने ।
बालिप्रमथानायास्तु महाधीराय मङ्गलम् ॥ 9॥

श्रीमते रघुवीराय सेतूल्लङ्घितसिन्धवे ।
जितराक्षसराजाय रणधीराय मङ्गलम् ॥ 10॥

विभीषणकृते प्रीत्या लङ्काभीष्टप्रदायिने ।
सर्वलोकशरण्याय श्रीराघवाय मङ्गलम् ॥ 11॥

आसाद्य नगरीं दिव्यामभिषिक्ताय सीतया ।
राजाधिराजराजाय रामभद्राय मङ्गलम् ॥ 12॥

ब्रह्मादिदेवसेव्याय ब्रह्मण्याय महात्मने ।
जानकीप्राणनाथाय रघुनाथाय मङ्गलम् ॥ 13॥

श्रीसौम्यजामातृमुनेः कृपयास्मानुपेयुषे ।
महते मम नाथाय रघुनाथाय मङ्गलम् ॥ 14॥

मङ्गलाशासनपरिर्मदाचार्यपुरोगमैः ।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यः सत्कृतायास्तु मङ्गलम् ॥ 15॥